चंडीगढ़ के शहरी गरीब बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन

गुरु त्रिशा सिंह*
सतविंदरपाल कौर**

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। आज वैश्वीकरण के युग में जहाँ संसार नज़दीक आता जा रहा है, वहीं मनुष्य के संदर्भ में समस्याएँ भी विकराल रूप धारण कर रही हैं। शिक्षा जहाँ मानव का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से उत्थान करती है, वहीं किसी भी राष्ट्र के निर्माण में भी अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा को सार्वभौमिक करने के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों को लागू किया गया। लेकिन यह अभी भी एक चिंता का विषय बना हुआ है कि सरकार आज़ादी के 70 वर्षों के बाद भी शिक्षा की सार्वभौमिक दर को प्राप्त करने में नाकाम रही है। इसमें कोई दो राय नहीं कि विद्यालयों में प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थी की नामांकन दर में वृद्धि हुई है। लेकिन जैसे-जैसे कक्षा का स्तर बढ़ रहा है, उसी के साथ-साथ उनके द्वारा विद्यालय छोड़ने की वृद्धि दर भी बढ़ रही है। सरकारों द्वारा अथक प्रयासों से बच्चों को विद्यालय में जाने का अवसर तो मिल रहा है, लेकिन विद्यालयी शिक्षा पूरी करना अभी भी एक चुनौती है। यह कहीं-न-कहीं हमारी नीतियों या सामाजिक व्यवस्था में त्रुटियाँ हैं जो इन बच्चों को शिक्षा पूरी करने में बाधा बनती हैं। इस शोध पत्र में बच्चों को विद्यालय छोड़ने के लिए मजबूर करने वाले कारणों पर प्रकाश डाला गया है। यह शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें चंडीगढ़ के स्लम इलाकों से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं। अध्ययन में मुख्य रूप से तीन कारणों का पता चल पाया है। जिसमें प्रमुख रूप से परिवार, समाज व विद्यालय संबंधी कारण हैं, जो विद्यार्थियों को विद्यालय छोड़ने पर मजबूर करते हैं। इसके अतिरिक्त गरीबी, शादी, माता-पिता की अज्ञानता, घर का माहौल, रोज़गार, विस्थापित करना, पढ़ाने का अच्छा तरीका नहीं होना व पाठ्यक्रम रोचक न होना इत्यादि कारण विद्यार्थियों को विद्यालय छोड़ने पर मजबूर करते हैं।

पृष्ठभूमि

वर्तमान समय में शिक्षा, व्यक्तियों के व्यक्तिगत उत्थान, बाधाओं को दूर करने और इस प्रक्रिया में, उनके मौजूद अवसरों और भलाई में निरंतर सुधार के लिए उपलब्ध विकल्पों का विस्तार करने के लिए एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह केवल मानव पूँजी, उत्पादकता और श्रम का मुआवज़ा बढ़ाने का एक साधन नहीं है, बल्कि जानकारी, ज्ञान के अधिग्रहण, आत्मसात् और संचार की प्रक्रिया को सक्षम करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है, जो सभी व्यक्तियों की गुणवत्ता को बढ़ाता है। शिक्षा केवल दूसरे सिरों के साधन के रूप में महत्वपूर्ण नहीं है,

* *शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब–160014
** *सह-प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब–160014

लेकिन यह एक विशेषता है जो अपने आप में महत्वपूर्ण है। शिक्षा और उपलब्धियों की प्रक्रिया का जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है। यह सामुदायिक जीवन में ज्ञान, संचार और भागीदारी प्राप्त करने की क्षमता को प्रदान करती है। यह एक व्यक्ति की और यहाँ तक कि समुदाय की सामूहिक धारणाओं, आकांक्षाओं, लक्ष्यों और साथ ही क्षमता और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को बदलती है। असमानता पर काबू पाने और एक समतावादी समाज में आने की इस प्रक्रिया में शिक्षा को एक प्रभावी साधन के रूप में देखा जाता है।

भारत में, स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, सभी को शिक्षा उपलब्ध कराना भारत सरकार की प्राथमिकता बन गई। इसलिए भारत सरकार द्वारा भारतीय संविधान में शिक्षा संबंधी विभिन्न प्रावधान किए गए और विभिन्न आयोगों और समितियों का गठन किया गया तथा अनेक योजनाएँ चलाई गईं। इसके साथ-साथ सभी नीतियों और कार्यक्रमों को पिछले समय में भारत सरकार द्वारा सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य (Education For All—EFA) को प्राप्त करने के लिए शुरू किया गया। जिसके लिए कई तरह के प्रयास किए गए। जिनमें 'सर्व शिक्षा अभियान' प्रारंभिक शिक्षा की एक बहुत बड़ी योजना थी। जिसमें शिक्षा का अधिकार अधिनियम—2009 मील का पत्थर साबित हुआ।

लेकिन जब हम ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति देखते हैं तो हम यह देख सकते हैं कि शहरी क्षेत्रों में, गरीबी और अमीरी के बीच का अंतर बहुत स्पष्ट है। यह ध्यान देने की ज़रूरत है कि पिछले 70 वर्षों के दौरान आर्थिक और औद्योगिक प्रगति ने अमीरों और गरीबों के बीच बहुत अधिक ध्रुवीकरण किया। शहरों और शहरी विकास ने इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोरोकिन कहते हैं,''समाज में जहाँ विद्यालय सभी सदस्यों के लिए सुलभ हैं, विद्यालय व्यवस्था एक सामाजिक उन्नयन का प्रतिनिधित्व करती है जो एक समाज के बहुत नीचे से चलती है।'' लेकिन भारतीय शहरी संदर्भ में, शिक्षा प्रणाली स्वयं समाज का एकीकरण करने के बजाय सामाजिक-आर्थिक रूप में विभाजित करने की अपराधी बन गई है। स्लम बस्तियाँ समाज में इस प्रभाग का उत्पाद हैं (गोविंदा, 1995)। स्लम बस्तियाँ एक सार्वभौमिक घटना हैं। और दुनिया भर के लगभग सभी शहरों में व्यावहारिक रूप से मौजूद हैं। यह माना जाता है कि जब से लोग शहरी समुदायों में रहने लगे, शायद तब से ही यह बस्तियाँ अस्तित्व में थीं।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल शहरी जनसंख्या 377 मिलियन है, जिसमें से 93.06 मिलियन जनसंख्या स्लम में रहती है। भारत की शहरी जनसंख्या की 21.5 प्रतिशत जनसंख्या इस वर्ग में रहती है। 46 मिलियन शहरी जनसंख्या में 2,50,99,576 जनसंख्या स्लम की दर्ज की गई है। इसका यह अभिप्राय है कि शहर में पाँचवाँ तथा भारत में हर बीसवाँ व्यक्ति इस वर्ग से संबंध रखता है।

चंडीगढ़ की 97.2 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती है, इसकी कुल शहरी आबादी 1,026,459 है। अगर हम स्लम की बात करें तो कुल शहरी आबादी का यह 9.3 प्रतिशत हिस्सा समेटे

सारणी 1 — भारत और चंडीगढ़ में स्लम जनसंख्या

स्थान	कुल शहरी जनसंख्या	कुल स्लम जनसंख्या	शहरी जनसंख्या में स्लम जनसंख्या का प्रतिशत
भारत	377,106,125	6,54,94,604	17.4
चंडीगढ़	1,026,459	95,135	9.3

स्रोत – भारत की जनगणना, 2011

हुए है। स्लम में रहने वाले लोग/वर्ग अभी भी अपनी आधारभूत सुविधा एवं शिक्षा के लिए संघर्षरत हैं। शिक्षा हर इनसान के लिए एक बुनियादी अधिकार है, लेकिन दुर्भाग्य से बहुत कम स्लम निवासियों को यह अधिकार मिल पाया है। स्लम बस्तियों में साक्षरता दर बहुत कम है, खासकर महिलाओं को पुरुषों से कम अवसर मिलते हैं। यह स्थिति दुनिया की सभी बस्तियों में समान नहीं है, लेकिन विकासशील देशों में इस असमानता को अधिक देखा गया है।

भारत में शिक्षा पर बड़ी संख्या में शोध अध्ययनों के बावजूद, शहरी स्लम इलाकों के बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त रूप से शोध नहीं किए गए हैं और शिक्षा शोधों में शहरी क्षेत्र के भीतर उच्च स्तर की असमानताओं पर ध्यान नहीं दिया गया है। हैरानी की बात है कि शिक्षा के नीतिगत दस्तावेज़ों में इन वर्गों की शिक्षा की समस्याओं का उल्लेख नगण्य है (गोविंदा, 2002)।

शहरी क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा की उपलब्धता बढ़ाने के लिए पहल की स्पष्ट कमी है। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की वृद्धि के साथ-साथ नामांकन में भी वृद्धि हो रही है, शहरी इलाकों की तुलना में ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक वर्गों में नामांकन काफ़ी अधिक रहा है। शहरी केंद्रों की तेज़ी से वृद्धि से यह पता चलता है कि क्या शहरों में शैक्षिक (और अन्य आवश्यक) सुविधाओं में समानांतर वृद्धि या गिरावट आई है या नहीं और यदि हाँ, तो किस हद तक? (*पब्लिक रिपोर्ट ऑन बेसिक एजुकेशन इन इंडिया, 1997*)

सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हमें उन बच्चों की शिक्षा को भी ध्यान में रखना चाहिए, जो शहरी एवं औद्योगिक विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। ये बच्चे शहर, राज्य व देश की आर्थिक उन्नति में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं। परंतु त्रासदी यह है कि कोई भी इनकी तरफ़ ध्यान नहीं दे पा रहा है। इन बच्चों को एक तरह से अनदेखा किया जा रहा है।

सारणी 2 — भारत और चंडीगढ़ में साक्षरता दर (प्रतिशत में)

स्थान	कुल साक्षरता दर	शहरी साक्षरता दर	स्लम साक्षरता दर
भारत	73.0	84.1	77.7
चंडीगढ़	86.4	86.2	66.4

स्रोत – भारत की जनगणना, 2011

सारणी 2 में हम देख सकते हैं कि चंडीगढ़ की स्लम बस्तियों की साक्षरता दर 66.4 है जो कि भारत की स्लम साक्षरता दर 77.7 से कम है। हाल ही में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (2017) की रिपोर्ट में चंडीगढ़ की शिक्षा को बाकी संघ शासित राज्यों के मुकाबले बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए सराहा गया है। अग्रवाल और चुघ (2003) के अनुसार, पिछड़े इलाकों के बच्चों के सामने प्राकृतिक बाधाएँ, जैसे— पहाड़, प्रतिकूल वातावरण आदि समस्या होती हैं। लेकिन स्लम में रहने वाले बच्चों के आगे व्यस्त सड़कें व रेलवे क्रॉसिंग इत्यादि कई घटक इनकी शिक्षा में रुकावट पैदा करते हैं। वास्तव में, यह आपूर्ति की तरफ़ से दिक्कत है। आठवाँ अखिल भारतीय विद्यालय शैक्षिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में शहरी स्लम में 26,652 विद्यालय हैं। जिसमें से 12,681 प्राथमिक, 7488 उच्च प्राथमिक, 4093 माध्यमिक व 2450 उच्चतर माध्यमिक हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत सरकार द्वारा बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए कई ठोस कदम उठाए गए हैं। जिनमें भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का अधिकार अधिनियम — 2009 मील का पत्थर साबित हुआ। 2010 में लागू हुए अधिनियम के अथक प्रयासों का एक लाभ तो यह मिला कि हमने नामांकन दर में वृद्धि की तथा सार्वभौमिक दर को काफ़ी हद तक प्राप्त भी कर लिया। यह हमारे देश की शिक्षा के लिए अच्छा संकेत है। सारणी 3 में (District Information System for Education —DISE) की रिपोर्ट के अनुसार, साल 2014–15 व 2015–16 में नामांकन अनुपात में पिछले वर्षों के मुकाबले वृद्धि तो हुई है जो कि किसी भी समाज के लिए अच्छा संकेत है। लेकिन इसके साथ-साथ विद्यालय छोड़ने का सिलसिला भी बरकरार है, जो कि एक चिंता का विषय है। अगर हम इन दोनों वर्षों के नामांकन अनुपात की दर पर दृष्टि डालें तो यह कहीं-न-कहीं कम हुई है जो कि एक चिंता का विषय है। लेकिन ये कहीं-न-कहीं राहत की बात भी है कि पिछले वर्षों के मुकाबले इसमें वृद्धि हुई है। नामांकन अनुपात में वृद्धि इस बात का प्रमाण नहीं है कि बच्चों की शिक्षा निरंतर चल रही है। 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसे अनेक प्रयासों से स्कूलों की आधारभूत सरंचना में तो वृद्धि हुई, लेकिन यह वृद्धि कहीं भी घरों या सामाजिक समस्याओं के साथ कोई खास संबंध नहीं रखती। यह कहीं-न-कहीं हमारी सरकारों तथा अलग-अलग कमेटियों व रिपोर्ट में कमी रही है कि वह इन बच्चों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का पता लगाने में नाकाम रही है। प्राथमिक स्तर पर तो इन बच्चों के विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने में वृद्धि हुई, लेकिन साथ-साथ उच्च स्तर पर विद्यालय छोड़ने की दर भी बरकरार है।

सारणी 3 — भारत और चंडीगढ़ में शुद्ध नामांकन अनुपात और विद्यालय छोड़ने की दर

स्थान	प्राथमिक स्तर		उच्च प्राथमिक स्तर	
	शुद्ध नामांकन अनुपात		*विद्यालय छोड़ने की दर*	
	2014–15	2015–16	2014–15	2015–16
भारत	87.41	87.30	3.77	4.03
चंडीगढ़	74.93	72.23	1.08	0.44

स्रोत— डायस की रिपार्ट 2014–15, 2015–16

डायस की रिपोर्ट 2014–15, 2015–16 को अगर हम ध्यान में रखें तो इसमें हम देखते हैं कि बेशक विद्यालय छोड़ने की दर थोड़ी कम हुई है, लेकिन यह अभी भी बरकरार है। चंडीगढ़ में साल 2014–15 में यह 1.08 थी जो कि 2015–16 में कम होकर 0.44 हो गई। लेकिन विद्यालय छोड़ने की दर का कम होना यह नहीं दर्शाता कि बच्चे विद्यालय शिक्षा नहीं छोड़ रहे हैं। एक तरफ़ तो सरकार की नीतियाँ सार्वभौमिक दर की ओर अग्रसर होने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन दूसरी ओर विद्यालय छोड़ने की परंपरा भी अपनी यथास्थिति बनाए हुए है। भले ही यह दर चंडीगढ़ में कम हो गई है। लेकिन अगर हम भारत को ध्यान में रखकर देखें तो विद्यालय छोड़ने की दर बढ़ रही है जो कि भारतीय शिक्षा प्रणाली, नीतियों व नीतिकारों पर एक प्रश्न चिह्न लगा रही है।

इंडियन एक्सक्लूशन रिपोर्ट 2013–14 के अनुसार, चंडीगढ़ में 2012–13 में नामांकन अनुपात में प्राथमिक से उच्च प्राथमिक में 35.7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। सामाजिक एवं ग्रामीण शोध संस्थान (2014) के अनुसार, भारत में लगभग छह मिलियन (2.97%) बच्चे 6–13 आयु वर्ग के विद्यालयों से बाहर हैं। यह संख्या पुरुषों (2.77%) के मुकाबले स्त्रियों (3.23%) में ज़्यादा पाई गई है। जनगणना 2011 के अनुसार, 23.1 प्रतिशत (22.72 मिलियन) शहरी बच्चों 5–18 वर्ग के विद्यालयों से बाहर हैं। इनमें से 9.1 प्रतिशत बच्चों ने अपनी विद्यालयी शिक्षा छोड़ दी तथा 13.93 प्रतिशत (13.75 मिलियन) बच्चे ऐसे हैं जो कभी विद्यालय ही नहीं गए। *स्टेट्स ऑफ़ चिल्ड्रन इन अर्बन एजुकेशन रिपोर्ट* (2016) के अनुसार, स्लम के कुल रहने वाले बच्चों में 2.14 प्रतिशत बच्चे विद्यालयों से बाहर हैं। 2.14 प्रतिशत लड़कों के मुकाबले 2.70 प्रतिशत लड़कियाँ विद्यालय नहीं जाती हैं। यह भारत की प्रगति के लिए संकट ही है। शिक्षा को सार्वभौमिक लागू करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। लेकिन फिर भी बच्चों के विद्यालय छोड़ने का क्रम लगातार जारी है। शायद कहीं-न-कहीं ये बात हमारी नीतियों पर एक प्रश्न चिह्न लगा रही है। इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा इन बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने के मुख्य कारणों को खोजने का प्रयास किया गया है। इन कारणों को ढूँढ़ने के लिए शोधार्थी ने चंडीगढ़ शहर का चयन किया।

अब तक के कारणों पर प्रकाश डालते शोध अध्ययन

अब तक के शोध/अनुसंधानों पर नज़र डालें तो समाज के इस वंचित वर्ग के ऊपर बहुत ही कम अध्ययन हो पाए हैं। अब तक जो भी शोध हुए उनके द्वारा शोधार्थी को इस वर्ग को शिक्षा प्राप्त करने में होने वाली बाधाओं के कारण पता चल पाए हैं। अब तक हुए शोध अध्ययनों में से कुछ निम्न हैं —

पटेल (1983) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि स्लम को दी जाने वाली शैक्षिक सुविधाओं की गुणवत्ता गैर-स्लम को दी जाने वाली सुविधाओं से काफ़ी निम्न किस्म की है। अध्यापक द्वारा बच्चों में खास रुचि न दिखाना, घर पर पढ़ने का माहौल न होना, माता-पिता द्वारा कोई रुचि न दिखाना, बच्चों के विद्यालय छोड़ने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। यदुप्पनवार (2002) ने बच्चों के शिक्षा पूरी न करने के कारणों का पता लगाने के लिए डिऊडरग

ब्लॉक में एक शोध अध्ययन किया, उसमें पाया गया कि बच्चों का विद्यालय छोड़ने में गरीबी एक मुख्य कारण है, इसके अतिरिक्त लड़कियों को विद्यालय न भेजना, माता-पिता का शिक्षा के प्रति झुकाव न होना भी अन्य कारण हैं। खोखर, गर्ग और भारती (2005) ने दिल्ली के स्लम बस्तियों के बच्चों में विद्यालयी शिक्षा पूरी न कर पाने के कारणों को पता लगाने पर अध्ययन में पाया गया कि लड़कियाँ, लड़कों के मुकाबले अधिक विद्यालय छोड़ रही हैं। सभी लड़कियाँ उच्च प्राथमिक या प्राथमिक से पहले ही विद्यालय छोड़ चुकी हैं। खास्नाबीस और चटर्जी (2007) ने अपने शोध में बताया कि हालाँकि सर्व शिक्षा अभियान ने सार्वभौमिकता को प्राप्त करने में सफलता तो प्राप्त की है, लेकिन अभी भी अलाभ परिवारों के बच्चे शिक्षा या निरंतर शिक्षा को प्राप्त करने में असफल रहे हैं। सुनाजिता (2009) ने अपने शोध में स्लम में रहने वाले बच्चों की विद्यालयी शिक्षा पूरी न कर पाने के कारणों पर प्रकाश डाला है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि घर की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। *प्लान इंडिया* (2009) ने 6–14 वर्षों के बच्चों के विद्यालय छोड़ने के मुख्य कारणों का पता लगाया, वे हैं— शिक्षा का प्रतिकूल वातावरण, सज़ा, विद्यालय की दूरी, मनोरंजन और खेल की असुविधा व काम का बोझ, घर का काम, भाई-बहन का ध्यान रखना व पशुओं को चराना इत्यादि। इसके अतिरिक्त पढ़ाई का असुरक्षित माहौल, घर व विद्यालय में परिवार द्वारा कोई सहयोग नहीं। गोबिन्दराजु और वेंकटेशन (2010) ने अपने शोध में पाया कि कम रुचि व परिवार के सदस्यों द्वारा ध्यान न देना, घर पर बच्चों का खयाल न रखना, माता-पिता का निरक्षर होना, घर पर किसी की जल्दी मृत्यु व किसी सदस्य का बीमार होना व घरवालों के रोज़गार में मदद करना, बच्चों के विद्यालयी शिक्षा छोड़ने के मुख्य कारण हैं। चुघ (2011) ने दिल्ली में स्लम बस्तियों के बच्चों के विद्यालय छोड़ने के मुख्य कारणों का पता लगाने के लिए अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति अधिक देखी गई है। जिनमें अन्य हैं, शिक्षा का खर्च न उठा पाना, विद्यालय की कमज़ोर आधारभूत संरचना, शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित न करना, अच्छी सेहत व खाना इत्यादि। नाथ, मैटी और हेल्डर (2013) ने कलकत्ता में स्लम के बच्चों की शिक्षा पर जिन कारणों का प्रभाव पड़ता है, उनका पता लगाया। उनके न्यादर्श में शामिल 24.17 प्रतिशत बच्चे विद्यालय छोड़ चुके थे। उनके कारणों में पाया गया कि विस्थापन, स्वास्थ्य, माता-पिता का व्यवसाय, उनकी शिक्षा, घर या रहने का माहौल व विद्यालय की आधारभूत संरचना बच्चों की शिक्षा पर सीधा प्रभाव डालते हैं। मोहंती (2014) के अनुसार, विद्यालय छोड़ने के मुख्य कारणों में शामिल है कि माता-पिता बच्चों को शिक्षा देना ही नहीं चाहते, विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति ज़्यादातर लड़कियों में देखने को मिलती है। न्यादर्श में शामिल बच्चों में 35 प्रतिशत बच्चे गरीबी व 35 प्रतिशत बच्चे विद्यालय संबंधी कारणों से या तो विद्यालय छोड़ गए या विद्यालय गए ही नहीं। काले (2017) ने अपनी रिपोर्ट में बच्चों के विद्यालय छोड़ने के मुख्य कारणों में गरीबी व घर का खराब वातावरण को मुख्य कारण बताया। आँकड़ों

के अनुसार 29 प्रतिशत बच्चे आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विद्यालय छोड़ गए। अधिकतर माता-पिता के अनुसार सातवीं तक पढ़ाई काफ़ी है तथा यह भी देखा गया कि अगर परिवार व समूह में एक बच्चा विद्यालय छोड़ रहा है तो अन्य भी विद्यालय बीच में ही छोड़ देते हैं। कौर (2017) ने चंडीगढ़ के स्लम में रहने वाले बच्चों के विद्यालय छोड़ने के कारणों को पता लगाने के लिए अध्ययन किया। जिसमें उन्होंने दो स्लम बस्तियों में सर्वेक्षण किया तथा पाया कि 16 प्रतिशत बच्चों का विद्यालय छोड़ने का कारण गरीबी था, 59 प्रतिशत बच्चों ने विद्यालय इसलिए छोड़ा था, क्योंकि उनकी कॉलोनियों को विस्थापित किया गया व इसके अतिरिक्त 10 प्रतिशत बच्चों ने अन्य कारणों से विद्यालय छोड़ दिया था।

संक्षेप में, विद्यालय की शिक्षा पूरी न कर पाने या कभी विद्यालय न जाने में कई कारणों को देखा गया तथा अलग-अलग शोधों व शोधार्थियों द्वारा अनेक कारणों का उल्लेख किया गया, जिसमें शामिल हैं, गरीबी (यदुप्पनवार 2002, गोबिन्दराजु और वेंकटेशन 2010, मोहंती 2014), घर का माहौल व घर पर काम (खोखर, गर्ग और भारती 2005, *प्लान इंडिया* 2009, गोबिन्दराजु और वेंकटेशन 2010) समूह या समाज के दबाव में विद्यालय छोड़ना (काले 2017) व एक अन्य कारण है कॉलोनियों को ध्वस्त करना (कौर 2017)।

इस शोध पत्र में मौजूदा समय में स्लम में रहने वाले बच्चों की विद्यालयी शिक्षा को पूरी न कर पाने के कारणों का पता लगाने के लिए शोधार्थी द्वारा चंडीगढ़ की स्लम बस्तियों में शोध अध्ययन किया गया। क्योंकि चंडीगढ़ के स्लम बस्तियों की साक्षरता दर भारत के स्लम बस्तियों की साक्षरता दर से बहुत कम है।

शोध प्रारूप व न्यादर्श

इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। यह शोध चंडीगढ़ के स्लम क्षेत्रों में रहने वाले 53 बच्चों के न्यादर्श पर किया गया। जिसमें इन बच्चों द्वारा विद्यालयी शिक्षा पूरी न कर पाने के कारणों को खोजा गया। विद्यालयी शिक्षा पूरी न कर पाने वाले विद्यार्थी वे हैं जो कम-से-कम एक साल से विद्यालय नहीं जा रहे हैं या जो कभी विद्यालय गए ही नहीं। प्रदत्त एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग किया गया। प्रदत्त एकत्रित करने के लिए शोधार्थी ने स्वयं विद्यार्थियों से साक्षात्कार किया। न्यादर्श का विभाजन सारणी 4 में दिया गया है।

सारणी 4 — न्यादर्श का विभाजन

क्र. सं.	विद्यालय छोड़ने का समय	बच्चों की संख्या
1.	कभी विद्यालय गए नहीं	5
2.	कक्ष 2–3 में विद्यालय छोड़ा	8
3.	कक्ष 4–5 में विद्यालय छोड़ा	15
4.	कक्ष 6–8 में विद्यालय छोड़ा	20
5.	कक्ष 8 के बाद विद्यालय छोड़ा	5
	कुल	53

आँकड़ों की चर्चा और व्याख्या

शोधार्थी द्वारा चंडीगढ़ के स्लम में रहने वाले बच्चों के साथ साक्षात्कार कर उनसे विद्यालय छोड़ने के कारणों को जानने का प्रयास किया गया। जिसमें कई कारण ज्ञात हुए, जो इस प्रकार हैं—

सारणी 5 — परिवार संबंधी कारण

क्र.सं.	कारण	लड़के (% में)		लड़कियाँ (% में)
1.	गरीबी	12	22.6	6
2.	भाई-बहनों का ध्यान रखना	0	0	3
3.	शादी-विवाह	2	3.77	4
4.	परिवार के सदस्यों की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं	3	5.66	4
5.	माता-पिता का अनपढ़ होना	3	5.66	2
6.	घर पर पढ़ाई का माहौल न होना	2	3.77	2

सारणी 5 दर्शाती है कि लगभग 34 प्रतिशत बच्चों का विद्यालय छोड़ने का मुख्य कारण गरीबी था। यह एक त्रासदी है की स्लम और गरीबी, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इन आँकड़ों पर नज़र डालें तो 5.66 प्रतिशत बच्चों ने विद्यालय इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि वो लड़कियाँ हैं और उन्हें अपने छोटे भाई-बहनों का ध्यान रखना पड़ता है, यह जेंडर भेदभाव बच्चों की शिक्षा में रुकावट पैदा करता है। शोध में पाया गया कि छह बच्चों ने विद्यालय छोड़ने के कारणों में मुख्य कारण शादी को बताया है, जिसमें चार लड़कियाँ तथा दो लड़के थे। चार बच्चों ने विद्यालय इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि उनके घर पर पढ़ने का माहौल नहीं होता था व सात बच्चों ने विद्यालय इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि उनके माता की शिक्षा में कोई रुचि नहीं थी। जबकि 9.43 प्रतिशत, जिनमें 5.66 प्रतिशत लड़के व 3.77 प्रतिशत लड़कियाँ शामिल हैं, को विद्यालय इसलिए छोड़ना पड़ा, क्योंकि उनके माता-पिता की पढ़ाई संबंधी अज्ञानता उनकी शिक्षा में बाधा बनी। बच्चों को अच्छी शिक्षा या पढ़ने के लिए अच्छा वातावरण होना ज़रूरी है। लेकिन इस समाज में रहने वाले बच्चों के घर का वातावरण शिक्षा के लिए अनुकूल नहीं होता। कुछ घरों के बड़ों द्वारा घर पर नशे का प्रयोग करके घर के माहौल को खराब किया जाता है, इसी अध्ययन में चार बच्चों ने विद्यालय छोड़ने की बात कही।

सारणी 6 से मुख्य दो कारणों का पता चला है— (1) बेरोज़गारी या रोज़गार पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होना। (2) कॉलोनियों को नष्ट करना। आज भारत जैसे देश में युवा लोगों के लिए रोज़गार प्राप्त करना एक गहन चिंता का विषय है। सारणी 6 में आँकड़ों पर नज़र डालें तो 7.54 प्रतिशत बच्चे जो कि सभी लड़के हैं, इसलिए विद्यालयी शिक्षा से विमुख हो गए, क्योंकि उन्हें लगा कि पढ़-लिखकर भी कहीं

सारणी 6— समाज संबंधी कारण

कारण	लड़के (% में)		लड़कियाँ (% में)		कुल
पढ़ाई के बाद नौकरी के कम अवसर या नौकरी न निलना	4	7.54	0	0	7.54
कॉलोनियों को तबाह/नष्ट करना	3	5.66	2	3.77	9.43

कोई पर्याप्त रोज़गार नहीं है व पढ़कर वे अपना समय ही बर्बाद करेंगे। आज आधुनिकता के युग में सरकारों द्वारा आधुनिकता पर बल दिया जा रहा है। इसी आधुनिकता को लेकर सरकार द्वारा भारतीय शहरों का आधुनिकीकरण करने के लिए स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं। जिसके अधीन स्लम में रहने वाले लोगों की कॉलोनियों को नष्ट करके उनको आवास प्रदान किए गए। लेकिन इस प्रकार के आधुनिकीकरण ने भी बच्चों की शिक्षा प्राप्त करने में रुकावटें पैदा कर दीं। शोध अध्ययन में 9.43 प्रतिशत बच्चे ऐसे पाए गए, जिनमें 5.66 प्रतिशत लड़के व 3.77 प्रतिशत लड़कियों को विद्यालय, विस्थापन करने के कारण छोड़ना पड़ा और जिस कारण से वे दोबारा से विद्यालय नहीं जा सके।

सारणी 7 में विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के विद्यालय से संबंधित कारणों का उल्लेख किया गया है। चार विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने विद्यालय इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें सज़ा मिलती थी। तीन बच्चों ने इसलिए विद्यालय छोड़ दिया, क्योंकि वे होमवर्क करके नहीं लाते थे और शिक्षक उसे डाँटती/ डाँटते थे और सज़ा भी देते थे। चार विद्यार्थियों ने विद्यालय इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें शिक्षक ने पढ़ाने में कोई रुचि पैदा नहीं की, शिक्षक के पढ़ाने का तरीका अच्छा नहीं था। दो लड़के व एक लड़की ने इस कारण से विद्यालय छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि पाठ्यक्रम में कुछ भी रुचिपूर्ण नहीं है।

प्रदत्त एकत्रित करते समय शोधार्थी को छह बच्चे ऐसे मिले जो कभी भी विद्यालय गए ही नहीं। इन सभी बच्चों के विद्यालय न जाने के अलग-अलग कारण थे, जो निम्न प्रकार हैं —

1. ''भाई जी। पढ़ाकर क्या करेंगे।
   हमारी मौसी का लड़का 15 क्लास पढ़ा है
   लेकिन अभी भी नौकरी नहीं मिली।
   जब पढ़कर भी यही काम करना है तो क्यों अपना समय खराब करें।''
2. ''हमारे घर में चार भाई-बहन हैं और मैं सबसे बड़ी हूँ। मम्मी-डैडी तो काम पर निकल जाते थे, तो घर का काम और भाई लोगों को कौन संभालता? इसलिए कभी विद्यालय का सोचा भी नहीं।''
3. ''भैया, घर पर खाने को रोटी नहीं होती। आप पढ़ाई की बात कर रहे हो! हमारे पापा नहीं हैं, अगर हम नहीं कमाएँगे तो घर का गुज़ारा कैसे चले, मम्मी अकेली कितना काम करेंगी।''

सारणी 7 — विद्यालय संबंधी कारण

क्र.सं.	कारक	लड़के (% में)		लड़कियाँ (% में)	
1.	अध्यापक द्वारा सज़ा देना	4	7.54	0	0
2.	घर का काम	2	3.77	1	1.88
3.	शिक्षण विधियों का रोचक न होना	1	1.88	3	5.66
4.	पाठ्यक्रम रोचक नहीं होना	2	3.77	1	1.88

4. ''मैं पढ़ना तो चाहता था, लेकिन क्या करें! पापा ने कभी विद्यालय जाने नहीं दिया। न वे खुद पढ़े, न हमें विद्यालय जाने दिया। बोलते थे, पढ़ के कौन-सा तुने लाड साहब बन जाना। बेटा तो एक झुग्गी वाले का ही रहेगा।''
5. ''हमारे मम्मी गाँव में रहती हैं, पर हमारे पापा और तीन भाई पिछले दस साल से यहीं रहते हैं। सभी काम पर जाते हैं। मम्मी खुद नहीं आ सकती यहाँ पर तो इसलिए हम जब थोड़े बड़े हुए तो हमें यहीं पर भेज दिया। अब बस घर के काम में ही उलझे रहते हैं।''
6. ''हमारी बड़ी बहन जो कि विद्यालय जाती थी उसने शादी किसी दूसरे बिरादरी के लड़के से कर ली। बस इसी डर से हमें पापा ने कभी विद्यालय नहीं भेजा।''

सुझाव

बच्चों के विद्यालय छोड़ने के कारणों पर हमने चर्चा की और शोध में पाया कि मुख्य तीन कारण हैं जो विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा को बाधित कर रहे हैं। हम अगर पहले कारण जो कि परिवार से संबंधित है, उस पर नज़र डालें तो उसमें मुख्य रूप से जो कारण निकल कर आया है, वह है गरीबी। गरीबी एक ऐसा कारण है जो 34 प्रतिशत बच्चों की विद्यालय शिक्षा छुड़वाने के लिए ज़िम्मेदार है। यह भी माना जाता है कि गरीबी और स्लम, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए सरकारों और नीतिकारों द्वारा ऐसी नीतियाँ बनाई जानी चाहिए जो गरीबी को दूर कर सकें। आज गरीबी विश्व के सभी विकासशील देशों के लिए गंभीर चिंता बनी हुई है। *मिड-डे-मील* जैसे कार्यक्रमों से विद्यालय में नामांकन दर में या बच्चों को विद्यालय की ओर लाने में सरकार सफल तो हुई है, लेकिन बच्चों की शिक्षा अभी भी दुविधा में है। क्योंकि ये बच्चे परिवार की आजीविका का साधन हैं। *मिड-डे-मील* से इन बच्चों के भोजन की व्यवस्था तो हो गई, लेकिन परिवार के बाकी सदस्यों के भोजन की सुविधा न होने के कारण ये बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़कर काम के लिए बाहर निकल रहे हैं। इसके अतिरिक्त जो परिवार संबंधी कारणों में अन्य बाधक कारण पाए गए, जिसमें शादी, माता-पिता का अनपढ़ होना, पढ़ने का माहौल न होना इत्यादि, ये सभी कारण कहीं-न-कहीं गरीबी से संबंधित हैं। इसलिए सबसे पहले 'गरीबी हटाओ' कार्यक्रमों पर ज़ोर देना चाहिए।

इसके बाद जो अन्य मुख्य कारण जो समाज संबंधी निकल कर आए थे, वो हैं बेरोज़गारी व कॉलोनियों को नष्ट करना। आज भारत में युवाओं की जनसंख्या के कारण विश्व में 'युवा देश' का दर्जा मिलता है। लेकिन भारत के युवा आज भी अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं। सरकारों के प्रयासों से बच्चे शिक्षा तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन शिक्षा प्राप्त करने के बाद बच्चों के पास सिर्फ़ निराशा हाथ लग रही है। आज भारत में शिक्षित बेरोज़गारी अपनी चरम सीमा पर है। जिस कारण कई बच्चे शिक्षा प्राप्त करना ही नहीं चाहते। सरकारों व नीतिकारों को चाहिए कि वह इन बच्चों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करें ताकि बच्चों की शिक्षा में रुचि पैदा हो व बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्सुक हों। इसके अतिरिक्त बच्चों की शिक्षा में तकनीकी शिक्षा के

ऊपर ज़ोर देना चाहिए ताकि वह स्कूली शिक्षा के बाद किसी काम में लग सकें व रोज़गार प्राप्त कर सकें। ताकि ये बच्चे शिक्षा प्रक्रिया में बने रहें।

इसके अतिरिक्त तीसरा मुख्य कारण विद्यालय संबंधी कारण थे। जिसमें मुख्य कारक थे, अध्यापकों द्वारा सज़ा देना, घर का काम, शिक्षण विधियों का रोचक न होना व पाठ्यक्रम रोचक न होना। बच्चों को विद्यालय में बनाए रखने के लिए या शिक्षा को और बढ़िया बनाने के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि बच्चों की इन शिक्षण विधियों के माध्यम से शिक्षा में रुचि बनी रही तथा इसके साथ-साथ बच्चों की कक्षा के पाठ्यक्रम में गतिविधियों को भी शामिल किया जाए ताकि बच्चों का मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास भी हो व उनका रूझान शिक्षा में बना रहे। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के शिक्षक प्रशिक्षण पर भी बल देना चाहिए ताकि वह इन बच्चों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार अपना सकें तथा साथ-साथ समावेशी शिक्षा पर भी ज़ोर दे सकें ताकि वह सभी बच्चों की समस्या को समझ सकें और उनमें शिक्षा के प्रति झुकाव बना रहे।

इसके अतिरिक्त नीतिकारों को नीतियाँ बनाते समय समाज के वंचित वर्ग के बच्चों की समस्या को समझना चाहिए तथा इसके साथ-साथ उन्हें शिक्षा के समान अवसर भी प्रदान किए जाने चाहिए। इन बच्चों के लिए इनके अधिकारों का लाभ देने के लिए अलग से नीतियों का विकास होना चाहिए। इन बच्चों को शिक्षा के दायरे में लेकर आना ही नहीं, बल्कि इनको शिक्षा की प्रक्रिया में बाँधे रखना भी बहुत ज़रूरी है। क्योंकि ये बच्चे भी समाज के विकास में उतने ही भागीदार हैं जितने अन्य बच्चे। इसके साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी प्रदान की जाए ताकि उनके दृष्टिकोण में बदलाव आ सके। नामांकन में वृद्धि होना कहीं भी यह सुनिश्चित नहीं करता कि शिक्षा भी गुणवत्तापूर्ण मिल रही है। इन वंचित वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा पॉलिसी को लागू किया जाना चाहिए ताकि उन्हें स्वास्थ्य व शिक्षा, दोनों की सुनिश्चितता प्रदान हो सके। इसके साथ-साथ इन बच्चों को जो शिक्षा मिल रही है वह सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों व कार्यक्रमों की निगरानी तंत्र में होनी चाहिए ताकि उनको मिलने वाली शिक्षा की गुणवता को मापा जा सके।

निष्कर्ष

शिक्षा मानव जीवन के विकास में मुख्य भूमिका निभाती है। शिक्षा किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक विकास की सीढ़ी है किसी देश में शिक्षा की कमी या शिक्षा के संसाधनों की कमी उस देश को विकसित देश बनने में रुकावट पैदा करती है। बच्चों में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति जो आज भारत जैसे विकासशील देशों में मिल रही है, यह कहीं-न-कहीं भारत की सरकारों द्वारा बनाई गई नीतियों, कार्यक्रमों व सामाजिक व्यवस्था पर एक बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न लगा रही है। बच्चे किसी भी समाज का आधार होते हैं। आज भारत दुनिया में सबसे युवा देशों में शुमार है। अगर हम युवाओं को बेहतर नहीं बनाएँगे तो हमारा आने वाला कल कैसे बेहतर होगा। विद्यालयी शिक्षा मानवीय जीवन का

आधार है, अगर आधार मज़बूत नहीं होगा तो उस पर किसी भी राष्ट्र का निर्माण भी स्थायी नहीं होगा। बच्चों द्वारा विद्यालयी शिक्षा छोड़ना कहीं-न-कहीं भारतीय समाज की रूपरेखा पर एक तीखा कटाक्ष है। अध्ययन में पाया गया कि बच्चों की विद्यालयी शिक्षा छोड़ने में गरीबी, माता-पिता की अज्ञानता, घर का वातावरण, बच्चों में जेंडर भेदभाव, विवाह, रोज़गार, पाठ्यक्रम रुचिकार न होना इत्यादि मुख्य कारण हैं जो बच्चों की शिक्षा को प्रभावित कर रहे हैं। सरकारों द्वारा शिक्षा को सार्वभौमिक करने में अथक प्रयास तो किया जा रहा है, लेकिन ये सब प्रयास धराशायी होते जा रहे हैं। हालाँकि नामांकन दर में तो वृद्धि हुई है, लेकिन विद्यालय छोड़ने की दर भी कक्षा का स्तर बढ़ने पर बड़ी है। बच्चों को शिक्षा में नामांकन करवाना ही नहीं, उन्हें लगातार शिक्षा प्रदान करना भी ज़रूरी है। आज सरकारों को ज़रूरत है कि वो समाज में जो असमानताएँ एवं सामाजिक समस्याएँ शिक्षा जैसी मुख्य आधारभूत सेवा में रुकावट बन रही हैं, उन्हें दूर करें ताकि बच्चों के विकास के साथ-साथ राष्ट्र का निर्माण हो सके।

संदर्भ

अग्रवाल, यशपाल और चुघ, सुनीता. 2003. लर्निंग अचीवमेंट ऑफ़ स्लम चिल्ड्रन इन दिल्ली. *न्यूपा ओकैज़िनल पेपर*. अंक 34. न्यूपा, नयी दिल्ली.

काले, आकाश. 2017. *रीज़न फ़ॉर स्कूल ड्रॉपआउट — ए स्टडी इन स्लम ऑफ़ पूना*. बी.ए. डिज़रटेशन. टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस, मुंबई, महाराष्ट्र.

कौर, सतविंदरपाल. 2012. स्कूल ड्रॉपआउट्स एट एलीमेंट्री स्टेज. *मैन एंड डिवेलपमेंट*. अंक 3. पृ. 117–126.

कौर, हरप्रीत. 2017. *ड्रॉपआउट इन स्लम ऑफ़ चंडीगढ़ इन कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट*. एम.एड डिज़रटेशन.पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, पंजाब.

खासनाबिस, रतन और चटर्जी, तानिया. 2007. इन्वॉल्विंग एंड रीटेनिंग स्लम चिल्ड्रेन इन. फ़ॉर्मल स्कूल. *इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली*. वर्ष 42, अंक 22.

खोखर, ए, गर्ग, सुनीता और एन. भारती. 2005. डेटर्मिनेन्ट्स ऑफ़ रीज़न ऑफ़ स्कूल ड्रापआउट्स अमंग ऑफ़ एन अर्बन स्लम ऑफ़ दिल्ली. *इंडियन जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी सर्विसेज़*. नयी दिल्ली

गोविंदराजु, र. और वेंकटेसन, श्रीनिवासन. 2010. ए स्टडी ऑफ़ स्कूल ड्रॉपआउट्स इन रूरल सेटिंग. *जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी*. वर्ष 1, अंक 1. पृ. 47–53.

———. गोविंदा, रंगाचार. 1995. *स्टेट्स ऑफ़ प्राथमिक एजुकेशन ऑफ़ द अर्बन पूअर इन इंडिया*. रिसर्च रिपोर्ट यूनिसेफ़.

———. 2002. *इंडियन एजुकेशन रिपोर्ट*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

चुघ, सुनीता. 2011. *ड्रॉपआउट इन सेकंडरी एजुकेशन — ए स्टडी ऑफ़ न्यू दिल्ली*. न्यूपा, नयी दिल्ली.

नाथ, आई., हेल्डर, के. और मैटी, एन. सी. 2013. एलीमेंट्री एजुकेशन ऑफ़ स्लम चिल्ड्रन — एन अटैम्पट टु रीच द अनरीच्ड. *इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. वर्ष 2, पृ. 68–81.

पटेल, सुरभि. 1983. *इक्वालिटी ऑफ़ एजुकेशन ऑपर्टयूनिटी इन इंडिया— ए मिथ ओर रियलिटी?* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

प्लान इंडिया. 2009. व्हाई आर चिल्ड्रन आउट ऑफ़ स्कूल? ए समरी ऑफ़ द स्टडी पार्टिसिपेटरी एप्रोच टू आईडेंटफ़ाई रीज़न फ़ॉर एक्सक्लूशन अमंग आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रन कंडक्टेड इन फ़ोर स्टेटस ऑफ़ इंडिया. नयी दिल्ली

भारत की जनगणना. 2011. *फाइनल पॉप्युलेशन टेबल*. ऑफ़िस ऑफ़ द रजिस्ट्रर जनरल ऑफ़ इंडिया. मिनिस्ट्री ऑफ़ होम अफेयर्स, गवर्मेंट ऑफ़ इंडिया, नयी दिल्ली.

मोहंती, प्रासमिता. 2014. नॉन-नरोलमेंट एंड ड्रॉपआउट इन एलीमेंट्री एजुकेशन — ए स्टडी ऑफ़ स्कैवेंजर्स चिल्ड्रन लीविंग इन अर्बन स्लम्स ऑफ़ लखनऊ एंड कानपुर. *यूरोपियन अकादमिक रिसर्च*. वर्ष-1, अंक-12. पृ. 5664–5677.

यदुप्पनवार. 2002. फ़ैक्टर्स इन्फ्लुएंस एलीमेंट्री *स्कूलस*. *सोशल वेलफेयर*. वर्ष 48, अंक 10. पृ. 10–14

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. 2009. *एर्थे ऑल इंडिया स्कूल एजुकेशन सर्वे*. एन. सी. ई. आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2017. *राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण– 2017*. एन. सी. ई. आर. टी., नयी दिल्ली.

सेंटर फ़ॉर डिवेलपमेंट इकोनॉमिक्स. पी.आर.ओ.बी.इ. 1997. *पब्लिक रिपोर्ट ऑन बेसिक एजुकेशन इन इंडिया*. द प्रोब टीम, सेंटर फ़ॉर डिवेलपमेंट इकोनॉमिक्स. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

सामाजिक एवं ग्रामीण शोध संस्थान. 2014.*नेशनल सैंपल सर्वे ऑफ़ एस्टीमेंशन ऑफ़ आउट ऑफ़ स्कूल चिल्ड्रन इन द ऐज 6-13 इन इंडिया*.

सुनाजिता, यूको. 2013. फ़ैक्टर्स दैट प्रेवेन्ट्स चिल्ड्रन फ्रॉम गैनिंग एक्सेस टू स्कूलिंग—ए स्टडी ऑफ़ दिल्ली स्लम हाउसहोल्ड्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल डिवेलपमेंट*. वर्ष 33 अंक 4. पृ. 348–357

सोरोकिन, पिटीरिम और एलेक्जेंडोविच. 1959. *सोशल एंड कल्चरल मोबिलिटी*. फ्री प्रेस., न्यू यॉर्क.

http://www-indianet-nl/pdf/IndiaExclusionReport20132014-pdf

https://cfsc-niua-rg/sites/default/files/Status_of_children_in_urban_India&Baseline_study_2016-pdf;